राजस्थान

कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट (CET)

HANDWRITTEN NOTES

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान CET

(RSMSSB)

(COMMON ELIGIBILTY TEST)

GRADUATION LEVEL

[भाग -2] राजस्थान का भूगोल + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

CET

(Graduation level)

भाग - 2

राजस्थान का भूगोल + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान CET (स्नातक स्तर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान CET (स्नातक स्तर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online order करें ➡ https://bit.ly/rajasthan-cet-notes graduation

whatsapp करें - ➡ https://wa.link/kmk3lu

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

राजस्थान का भूगोल

1. भूगर्भिक संरचना एवं भू-आकृतिक प्रदेश	1
2. जलवायु दशाएं, मानसून तंत्र एवं जलवायु प्रदेश	44
3. अपवाह तंत्र, झीलें, सागर, बाँध एवं जल संरक्षण तकनीकें	57
4. प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीव –जन्तु एवं अभयारण्य	90
5. मृदाएँ	102
6. रबी एवं खरीफ की प्रमुख फसलें	108
7. जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, एवं लिंगानुपात	123
8. प्रमुख जनजातियाँ	135
9. धात्विक एवं अधात्विक खनिज पदार्थ	139
10. ऊर्जा संसाधन-परम्परागत एवं गैर परम्परागत	156
11. पर्यटन स्थल	169
12. यातायात के साधन – राष्ट्रीय राजमार्ग, रेल एवं वायुयान	177
13. राजस्थान में पशुपालन	190

राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

1. राज्यपाल	200
2. मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्	210
3. राज्य विधानसभा	220
4. उच्च न्यायालय	332
5. राजस्थान लोक सेवा आयोग	241
6. जिला प्रशासन	245

7. राज्य मानवाधिकार आयोग 251
8. लोकायुक्त 255
9. राज्य निर्वाचन आयोग 258
10. राज्य सूचना आयोग 261

राजस्थान की अर्थव्यवस्था

1. राजस्थान की खाद्य व व्यावसायिक फसले 265
- कृषि आधारित उद्योग
- कृषि से सम्बंधित आंकड़े

2. अर्थव्यवस्था का वृहत परिदृश्य 271

3. वृहद सिंचाई एवं नदी घाटी परियोजनायें 283
- बंजड भूमि व सूखा क्षेत्र विकास परियोजनायें
- इन्दिरा गांधी नहर परियोजना

4. राजस्थान में औद्योगिक विकास 284
- प्रमुख उद्योग
- कृषि आधारित उद्योग,
- खनिज आधारित उद्योग इत्यादि

5. गरीबी एवं बेरोजगारी 302
- वर्तमान फ्लेगशिप योजनायें
- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता कमजोर वर्गों के लिए प्रावधान।

6. विभिन्न कल्याणकारी योजनायें 310

- *महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MNREGA),*
- *विकास संस्थायें ,*
- *सहकारी आन्दोलन लघु उद्यम एवं वित्तीय संस्थायें,*
- *संविधान के 73 वें संशोधन के अनुरूप पंचायती राज संस्थाओं की ग्रामीण विकास में भूमिका*

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – I

भूगर्भिक संरचना एवं भू-आकृतिक प्रदेश

प्रिय छात्रों, राजस्थान के भूगोल का अध्ययन करने के लिए हम इसे दो भागों में विभाजित करेंगे-

1. सामान्य परिचय
2. भौतिक स्वरूप

1. सामान्य परिचय -

प्रिय छात्रों, सामान्य परिचय के अंतर्गत हम राजस्थान के निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे-

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख

(ख) राजस्थान की स्थिति

(ग) राजस्थान का विस्तार

(घ) राजस्थान का आकार

(ङ) राजस्थान की आकृति

2. भौतिक स्वरूप -

इसी प्रकार भौतिक स्वरूप के अंतर्गत हम निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे –

(क) पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

(ख) अरावली पर्वतीय प्रदेश

(ग) पूर्वी मैदानी प्रदेश

(घ) दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

1. राजस्थान का परिचय

राजस्थान शब्द का अर्थ :- राजाओं का स्थान

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख :-

- राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।
- मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक **"मुहणोत नैणसी"** ने भी अपनी पुस्तक "नैणसी री ख्यात" में भी **राजस्थान शब्द का प्रयोग** किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।

महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।

जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सन् 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को **"राजपूताना"** शब्द कहकर पुकारा था। इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक "मिलिट्री मेमोरीज ऑफ़ मिस्टर थॉमस" में किया है।

जॉर्ज थॉमस का परिचय :-

- जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे, जो कि 18 वीं सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे।
- इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन् था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।

विलियम फ्रैंकलिन :-

- विलियम फ्रैंकलीन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ट मित्र थे। उन्होंने 1805 ई. में जॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।
- अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार **"अबुल फजल"** ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए **"मरुभूमि"** शब्द का प्रयोग किया है।
- 1829 ईस्वी में **"कर्नल जेम्स टॉड"** ने अपनी पुस्तक **"एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान"** में सर्वप्रथम राजस्थान को रायथान, रजवाड़ा" या राजस्थान का नाम दिया था।

कर्नल जेम्स टॉड :-

- कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1822 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे।

- कर्नल जेम्स टॉड ब्रिटेन के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें **घोड़े वाले बाबा** के नाम से भी जाना जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड को **"राजस्थान के इतिहास का पितामह"** कहा जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को "सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" के नामक से भी जानते हैं।
- इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "गौरीशंकर -हरीशचंद्र ओझा" ने किया था। इसे हिंदी में "प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण" कहते हैं।
- कर्नल टॉड सर्वेक्षण के सिलसिले में अजमेर और उदयपुर में कई जगह पर रहे थे- उनमें भीम नामक कस्बे में छोटा सा गाँव बोरसवाडा भी था- जो जंगलों और अरावली-पहाड़ों से घिरा हुआ है।
- उन्हें यह जगह पसंद आई तो उदयपुर के महाराजा भीम सिंह की सहमति से स्वयं के लिए बोरसवाडा में एक छोटा सा किला बनवा लिया।
- महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गाँव का नाम टॉडगढ़ रख दिया, जो कालान्तर में टाडगढ़ कहलाने लगा। टाडगढ़ आज अजमेर जिले की एक तहसील का मुख्यालय है।
- कर्नल टॉड के किले में वर्तमान में सरकारी स्कूल चलता है

(ख) <u>राजस्थान की स्थिति</u>:- प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे।

(I) राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" पर:- पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा –

(क) अंगारा लैंड / यूरेशियल प्लेट

(ख) गोंडवाना लैंड प्लेट

(ग) टेथिस सागर

(घ) पेंजिया

(ङ) पेंथालासा

नोट:- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि – आज से लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी दो भागों में विभाजित थी।

1. स्थल

2. जल

- जैसा कि आज भी दिखाई देता है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखें तो हमें यह कई भागों में विभाजित दिखाई देता है, जैसे सात महाद्वीप अलग - अलग हैं।
- उनके भी कई देश एक - दूसरे से काफी अलग अलग हैं। लेकिन लाखों – करोड़ों वर्ष पूर्व संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था।
- इसी **स्थलीय क्षेत्र को "पेंजिया"** के नाम से जानते थे तथा शेष बचे हुए भाग को **(जल वाले क्षेत्र को) "पेंथालासा"** के नाम से जानते थे।
- नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-

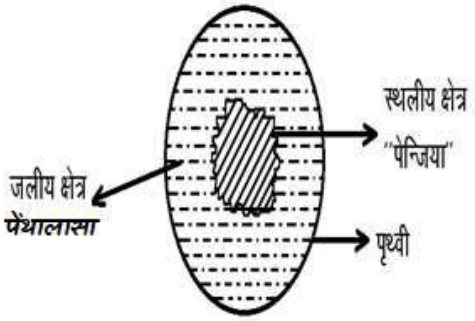

प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पेंजिया (स्थलीय क्षेत्र) दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ। इस **स्थलीय क्षेत्र को "अंगारा लैंड /यूरेशियन प्लेट"** के नाम से जानते हैं।

इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को **"गोंडवाना लैंड"** 'प्लेट' के नाम से जानते हैं।

- दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।
- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-

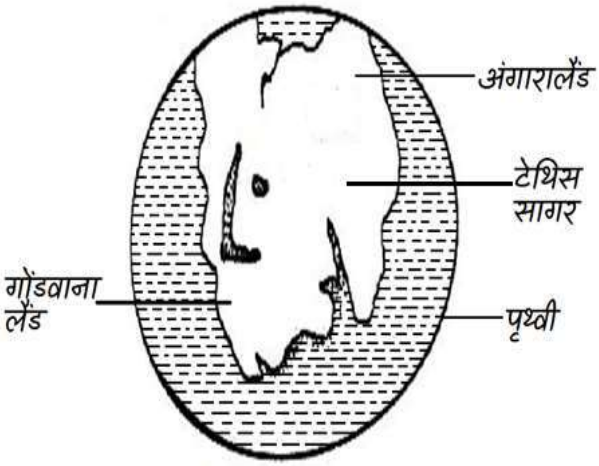

विशेष नोट:- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीलें "टेथिस सागर" के अवशेष हैं तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वतमाला) एवं दक्षिण पूर्वी पठारी भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से हैं।

टेथिस सागर- टेथिस सागर को गोंडवाना लैंड प्लेट और यूरेशियन प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है जो कि एक छिछला और संकरा सागर था, और इसी में जमा अवसादों के प्लेट विवर्तनिकी के परिणाम स्वरुप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।

प्रिय छात्रों, अब तक हम अंगारा लैंड, गोंडवाना लैंड, टेथिस सागर, पेंजिया तथा पेंथाल्जा का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर चुके हैं। अब हम **पृथ्वी पर राजस्थान की** स्थिति, का अध्ययन करते हैं। नीचे दिए गए मानचित्रों को ध्यान से समझिए-

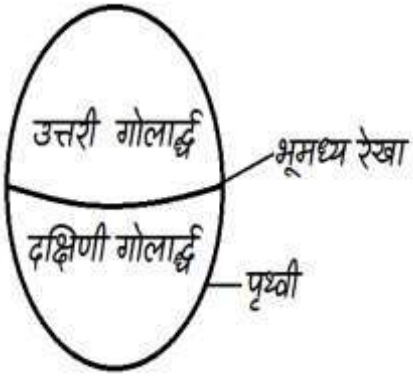

मानचित्र - 1

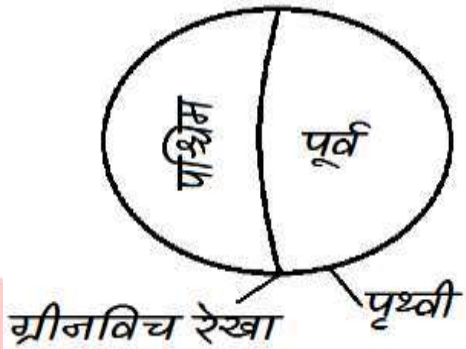

मानचित्र - 2

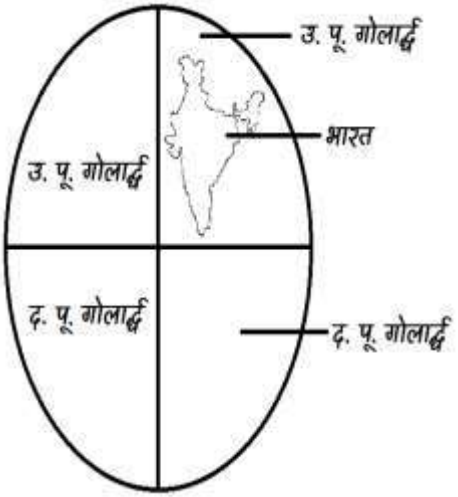

मानचित्र - 3

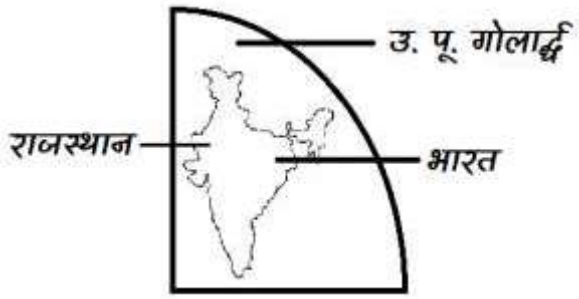

मानचित्र – 4

प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं।

- **पृथ्वी को भूमध्य रेखा** (विषुवत रेखा) से दो **भागों में** विभाजित किया गया है –

1. उत्तरी गोलार्द्ध
2. दक्षिणी गोलार्द्ध

इसे आप मानचित्र – 1 के माध्यम से समझ सकते हैं।

इसी प्रकार ग्रीनविच रेखा पृथ्वी को दो भागों में बांटती है–

1. पूर्वी क्षेत्र
2. पश्चिमी क्षेत्र

जिसे आप मानचित्र – 2 में देख सकते हैं।

नोट :–

1. विश्व (अर्थात् **पृथ्वी पर**) में राजस्थान **"उत्तर - पूर्व"** दिशा में स्थित है। (देखे मानचित्र– 3)
2. एशिया महाद्वीप में राजस्थान **"दक्षिणी -पश्चिम"** दिशा में स्थित है। (देखिए मानचित्र – 3,4)
3. **भारत में** राजस्थान **उत्तर - पश्चिम** में स्थित है। देखिए मानचित्र -4 (भारत)]

अब तक हमने देखा कि राजस्थान शब्द का उद्भव कैसे हुआ? तथा हम ने समझा कि पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति कहां पर है? अब हम अपने अगले बिंदु "राजस्थान का विस्तार" के बारे में पढ़ते हैं–

राजस्थान का विस्तार –इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए–

1. भूमध्य रेखा (विषुवत रेखा)
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए–

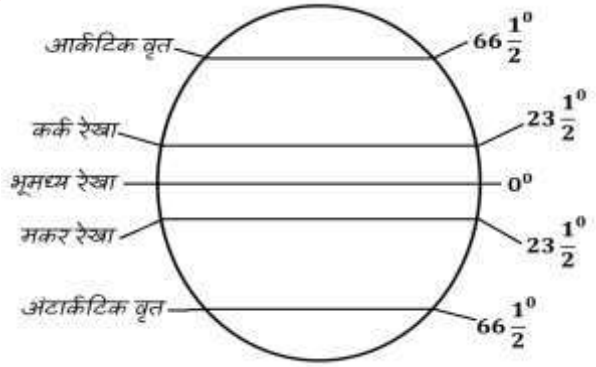

मानचित्र – 1

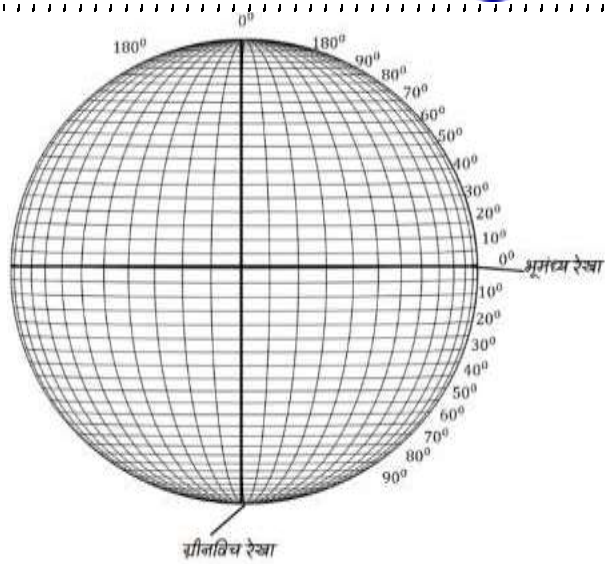

मानचित्र – 2

नोट - भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा है। यह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे **विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा** कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तर में कर्क रेखा है व दक्षिण में मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी या ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "उत्तर - दक्षिण तथा पूर्व - पश्चिम"में विभाजित किया गया है। इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते है।

अक्षांश रेखाएँ - वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अर्थात् भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। **भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा** माना गया है। (देखें मानचित्र -1)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90° उत्तरी गोलार्द्ध में और 90° दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180° है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181° होती है।

देशांतर रेखाएं- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360° रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है।

पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली और उत्तर - दक्षिण दिशा में खींची गयी। **काल्पनिक रेखाओं को याम्योत्तर , देशान्तर , मध्यान्तर रेखाएं कहते हैं।**

- ग्रीनविच, (जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है) से गुजरने वाली याम्योत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए । इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते हैं।
- इसका मान देशांतर है तथा यहाँ से हम 180° डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक ''भारत एवं विश्व का भूगोल पढ़े"।

राजस्थान का **अक्षांशीय विस्तार 23°03" से 30°12" उत्तरी अक्षांश** ही तक है जिसका **अंतर 7°09 मिनट** है। जबकि राजस्थान का **देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर** है। जिसका अंतर **8°47 मिनट है।** (देखें मानचित्र A, B)

राजस्थान
विभिन्न क्षेत्रों के प्राचीन नाम

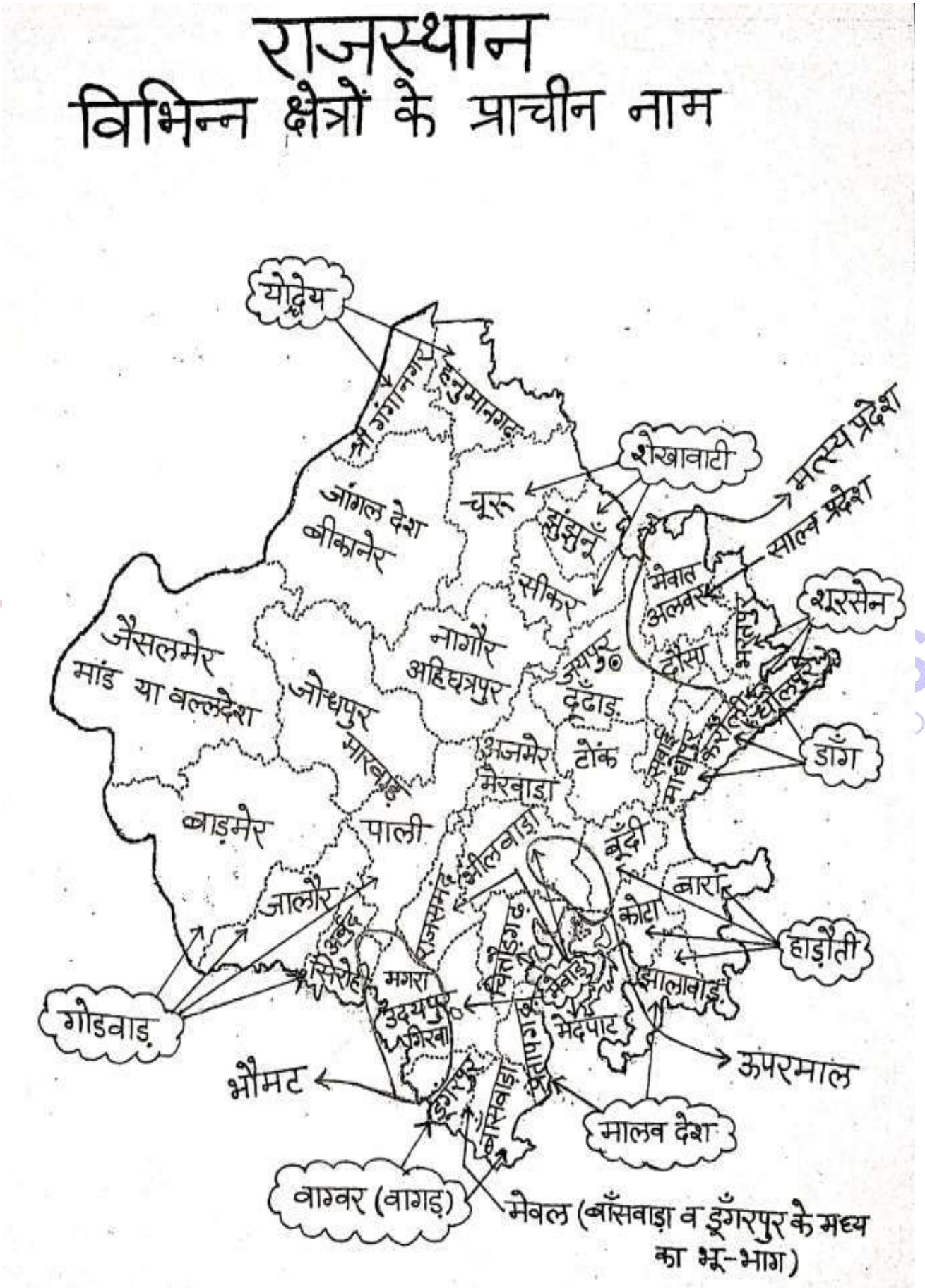

प्राचीन भौगोलिक क्षेत्रों की वर्तमान स्थिति

जांगल देश – **बीकानेर** और **जोधपुर** जिले का **उत्तरी** भाग

यौद्धेय – **हनुमानगढ़** और **श्रीगंगानगर** के आसपास का क्षेत्र

गिरवा - उदयपुर में चारों ओर पहाड़ियाँ होने के कारण **उदयपुर की आकृति एक तश्तरीनुमा बेसिन** जैसी है जिसे स्थानीय भाषा में गिरवा कहते हैं।

गोडवाड़– दक्षिण पूर्वी बाड़मेर, पश्चिमी सिरोही, जालौर

अहिछत्रपुर - नागौर

राठ – अलवर जिले का हरियाणा राज्य से लगता क्षेत्र

शेखावाटी - चूरू, सीकर, झुंझुनू जिले

ढूंढाड़ – जयपुर में आसपास का क्षेत्र, दौसा

कुरुदेश – अलवर जिले का उत्तरी भाग

आर्बुद व चंद्रावती - सिरोही व आबू के आसपास का क्षेत्र

माँड या वल्लभ देश - जैसलमेर

वागड़ या वाग्वर - डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़

मेवल – डूंगरपुर, बाँसवाड़ा के मध्य का भाग

मरु या मारवाड़ – जोधपुर व आसपास का क्षेत्र

मेवात - भरतपुर व अलवर का प्रदेश

हाड़ौती - कोटा, बूंदी, झालावाड़ व बारां जिले

तोरावाटी - शेखावाटी में **कांतिली नदी** का अपवाह क्षेत्र जहाँ प्रारंभ में तवर या **तोमर वंशीय शासकों** का अधिपत्य रहा ।

बांगड़ या बांगर - पाली, नागौर, सीकर, व झुंझुनू जिले का कुछ भाग (लूनी नदी का अपवाह क्षेत्र)

मत्स्य - अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली जिलें की पूर्वी भाग

मेरु – अरावली पर्वतीय प्रदेश

गुर्जरात्रा – जोधपुर जिले का दक्षिणी भाग (मंडोर)

मेरवाड़ा - अजमेर व राजसमंद जिले का दिवेर क्षेत्र

खेराड़ व मालखेराड़ - भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर तहसील व टोंक जिले का अधिकांश भाग

मालव देश - प्रतापगढ़, झालावाड़

थली - बीकानेर, पाली, नागौर और चुरू का अधिकांश भाग एवं दक्षिणी श्रीगंगानगर की मरुस्थलीय भूमि

भौमट क्षेत्र - डूंगरपुर, पूर्वी सिरोही, उदयपुर जिले का अरावली पर्वतीय आदिवासी क्षेत्र

सालव प्रदेश – अलवर का क्षेत्र

भोराठ का पठार – उदयपुर जिले की गोगुंदा व राजसमंद जिले की कुंभलगढ़ तहसीलों का क्षेत्र, कुंभलगढ़ व गोगुंदा के मध्य का पठारी भाग।

लसाड़िया का पठार – उदयपुर में जयसमंद से आगे कटा - फटा पठारी भाग।

देशहरो – उदयपुर में जरगा (उदयपुर) व रागा (सिरोही) पहाड़ियों के बीच का क्षेत्र सदा हरा भरा रहने के कारण देशहरो कहलाता है।

मगरा - उदयपुर का उत्तरी पश्चिमी पर्वतीय भाग मगरा कहलाता है।

ऊपरमाल - चित्तौड़गढ़ के भैंसरोड़गढ़ से लेकर भीलवाड़ा के बिजोलिया तक का पठारी भाग ऊपरमाल कहलाता है।

नाकोड़ा पर्वत छप्पन की पहाड़ियाँ – बाड़मेर के सिवाना ग्रेनाइट पर्वतीय क्षेत्र में स्थित गोलाकार पहाड़ियों का समूह नाकोड़ा पर्वत या छप्पन की पहाड़ियाँ कहलाती हैं।

छप्पन का मैदान – बाँसवाड़ा व प्रतापगढ़ के मध्य का भाग पन का मैदान कहलाता है। यह मैदान माही नदी बनाती है।

कांठल - माही नदी के किनारे - किनारे प्रतापगढ़ का भू - भाग कांठल कहलाता है। इसलिए **माही नदी को कांठल की गंगा कहते हैं।**

भाखर या भाकर – पूरी सिरोही क्षेत्र में अरावली की तीव्र ढाल वाली ऊबड़ - खाबड़ पहाड़ियों का क्षेत्र भाखर या भाकर कहलाता है।

खेराड़– भीलवाड़ा व टोंक का वह क्षेत्र जो बनास बेसिन में स्थित है।

D. झालावाड़, बूंदी, टोंक

उत्तर - (A)

5. सर्वाधिक लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा किस जिले की है?

A. बाड़मेर B. जैसलमेर

C. बीकानेर D. गंगानगर

उत्तर – B

6. राजस्थान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा कितनी लंबी है?

A. 1070 KM B. 1085 KM

C. 1065 KM D. 1060 KM

उत्तर - (A)

7. कर्क रेखा राज्य के किन जिलों से होकर गुजरती है?

A. बारां व झालावाड़ B. बाड़मेर व चूरू

C. बांसवाड़ा व डूंगरपुर D. बूंदी व भीलवाड़ा

उत्तर – C

8. राजस्थान में कौन सा क्षेत्र मालव क्षेत्र के नाम से जाना जाता है?

A. बांसवाड़ा - प्रतापगढ़ B. डूंगरपुर – प्रतापगढ़

C. झालावाड़ - प्रतापगढ़ D. बूंदी - झालावाड़

उत्तर – C

9. राजस्थान का प्रवेश द्वार किसे कहा जाता है?

A. झालावाड़ B. धौलपुर

C. हनुमानगढ़ D. भरतपुर

उत्तर – D

10. राजस्थान के किस जिले से अधिकतम जिलों की सीमाएँ स्पर्श करती है, वह है?

A. अजमेर B. पाली

C. भीलवाड़ा D. नागौर

उत्तर – B

• प्रमुख भू-आकृतिक प्रदेश

नोटः- प्रिय पाठकों जैसा कि आपको ज्ञात है कि राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इस विशाल राज्य में रेगिस्तान, नदियाँ, पर्वत एवं पहाडियाँ, पठार अलग - अलग क्षेत्रों में पाये जाते हैं । इनकी वजह से राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-

1. पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश – वह क्षेत्र जहाँ पर रेगिस्तान पाया जाता है
2. अरावली पर्वतमाला - वह क्षेत्र जहाँ पर अरावली पर्वतमाला का विस्तार है।
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश **दोमट व जलोढ़ मिट्टी** पाई जाती हैं
4. दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश - वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश मात्रा में **काली मिट्टी** पाई जाती है, इस क्षेत्र को **हाड़ौती का पठार** भी कहते है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

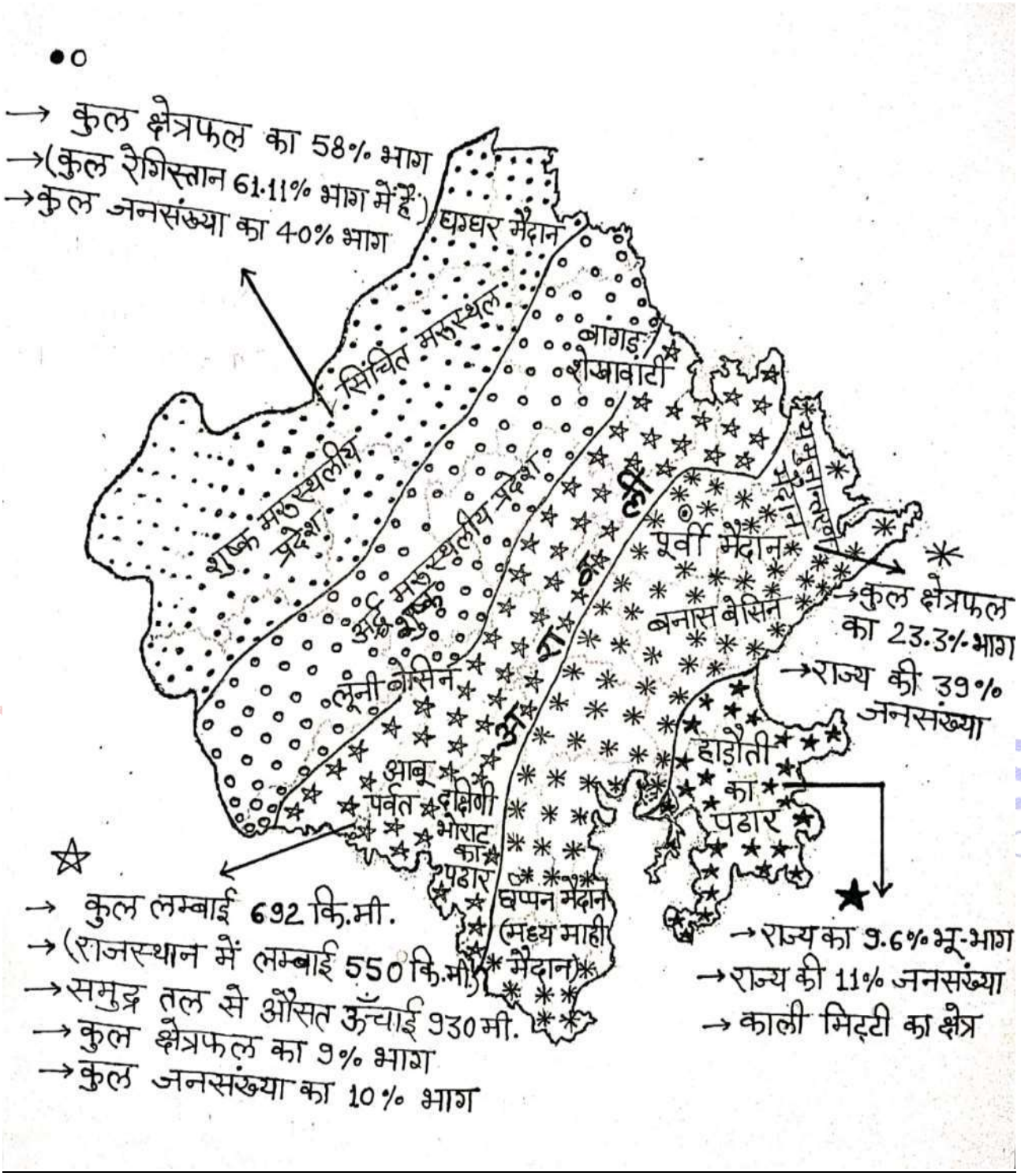

प्रिय छात्रों, इन चारों प्रदेशों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

- ***<u>पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश</u>:-***

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का सामान्य परिचय :-

वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।

नोटः- *पहले ये क्षेत्र केवल 58 प्रतिशत भाग पर ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में अरावली पर्वतमाला के कटी – फटी होने के कारण मरुस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रहा है।*

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 12 जिले स्थित हैं, उनमें से **12 जिलों में रेगिस्तान का विस्तार** है । यह जिले निम्न प्रकार हैं-

1. बीकानेर संभाग - बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
2. जोधपुर संभाग - जोधुपर, जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर, पाली (अपवाद- सिरोही)
3. शेखावाटी क्षेत्र - सीकर, झुंझुनू
4. अजमेर संभाग – नागौर

नोटः – राज्य के सि**रोही जिले में मरुस्थल का विस्तार नहीं है** अर्थात् अरावली के पश्चिम में स्थित **13 जिलों में से सिरोही एक मात्र ऐसा** जिला है, जो मरुस्थलीय जिलों की श्रेणी में शामिल नहीं है।

- **थार का रेगिस्तान** राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है।
- यह **उत्तर – पश्चिम में 645 किमी॰ लम्बा और 360 किमी॰ चौड़ा है** ।
- इस का सामान्य ढ़ाल **उत्तर – पूर्व से दक्षिण – पश्चिम** की ओर है ।
- मरुस्थल का **ऊँचा उठा हुआ उत्तर -पूर्वी भाग 'थली' तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली** 'कहलाता है।

इस मरुस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल **जनसंख्या का लगभग 40** प्रतिशत हिस्सा निवास करता है।

यह **विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल** है तथा इसके अलावा यह विश्व में सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरुस्थल भी है।

प्रश्न.1 भारत के थार मरुस्थल का कितना भाग राजस्थान में है? (RAS - 2016)

A. 40 प्रतिशत **B. 60 प्रतिशत**

C. 80 प्रतिशत **D. 90 प्रतिशत**

उत्तर - B

- थार के मरुस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ है, कि यह **विश्व का एक मात्र** ऐसा मरुस्थल है, जिसके निर्माण में **दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान** है।
- थार का मरुस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है ।
- ग्रीष्म काल में तेज गर्मी के कारण इस प्रदेश में न्यून वायु दाब केन्द्र विकसित हो जाता है। जो दक्षिण - पश्चिमी मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है। यह हवायें सम्पूर्ण प्रायद्वीप में वर्षा करती है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून को आकर्षित करने में इस मरुस्थल की उपस्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यंत विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49° C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।

आँकल जीवाश्म पार्क, जलोद्भिद तलछट व लिग्नाइट, खनिज तेल इत्यादि से इस तथ्य की पुष्टि होती है, कि **थार का मरुस्थल 'पर्माकार्बोनिफेरस युग'** में टेथिस सागर का हिस्सा था।

नोटः-मरुस्थलीकरण का मूल कारण :-

मरुस्थलीकरण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। विश्व की कुल जनसंख्या का छठवाँ हिस्सा मरुस्थलीकरण की समस्या से प्रभावित है।

सन् 1952 में "Symposia on Indian Desert" का आयोजन किया गया जिसमें थार के मरुस्थल की उत्पत्ति पूर्व में इसका विस्तार आदि पर विस्तृत चर्चा की गई है।

<u>क्या होता है मरुस्थलीकरण?</u>

- उपजाऊ एवं अमरुस्थलीय भूमि का क्रमिक रूप शुष्क प्रदेश अथवा मरुस्थल में परिवर्तित हो जाने की प्रक्रिया ही मरुस्थलीकरण है ।
- मरुस्थलीकरण प्रकृति की परिघटना है जो **जलवायवीय परिवर्तन व दोष पूर्ण भूमि उपयोग के कारण होती है।**
- यह क्रम वृद्धि परिघटना है , जिसमें मानव द्वारा भूमि उपयोग पर दबाव के कारण परिवर्तन होने से परितंत्र का अवनयन होता है।

1. सांभर झील

- **राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।**
- इस झील का विस्तार 3 जिलों में है - **जयपुर, अजमेर और नागौर,** लेकिन सर्वाधिक विस्तार जयपुर जिले में है और इसका प्रशासनिक अधिकार नागौर जिले का है।
- इस झील की लंबाई दक्षिण - पूर्व से उत्तर - पश्चिम की ओर लगभग 32 किलोमीटर है और चौड़ाई लगभग 3 से 12 किलोमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र लगभग 500 वर्ग किलोमीटर है।
- **सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं । इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा नमक उत्पादन कार्य किया** जा रहा है । इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन नमक उत्पादन होता है जो **भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील** से ही उत्पादित होता है।

इस झील से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

- **सांभर झील "स्वाईसरुबीना" नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है ।** इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।
- यह झील अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -
- तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात् **तीर्थों की नानी,**
- शाकंभरी माता का मंदिर,
- संत हमीदुद्दीन की पुण्य भूमि,
- जहाँगीर की ननिहाल,
- अकबर की विवाह स्थली
- चौहानों की राजधानी

- ऐसा माना जाता है कि **इस झील का निर्माण बिजोलिया शिलालेख के अनुसार चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान द्वारा** करवाया गया था।
- इस झील का आकार आयताकार है इस झील पर सन् 1857 में अंग्रेजों द्वारा स्थापित सांभर साल्ट म्यूजियम स्थित है।
- **पर्यटन के क्षेत्र में रामसर साइट के नाम से भी इसे जाना जाता है।**

प्रश्न – 3. राजस्थान की किस झील को रामसर आर्द्रभूमि की सूची में सम्मिलित किया गया है?

(RAS - 2016)

A. जयसमंद झील

B. आनासागर झील

C. राजसमंद झील

D. सांभर झील

उत्तर - (D)

2. पचपदरा झील -

- ऐसा माना जाता है कि 400 ईसा पूर्व पंचा नामक एक भील व्यक्ति के द्वारा एक दलदल को सुखाकर इस झील के आसपास की बस्तियों का निर्माण करवाया गया था इसलिए इस झील को पचपदरा झील कहते हैं
- यह झील राजस्थान **राज्य के बाड़मेर जिले के बालोतरा में स्थित है।**
- इस झील से प्राचीन समय से ही **खारवाल जाति के 400 परिवार मोरली वृक्ष की टहनियों से भी नमक के (क्रिस्टल) स्फटिक तैयार** करते थे।
- **इस झील में 98% सोडियम क्लोराइड की मात्रा पाई जाती है इस झील का नमक खाने के लिए सबसे उपयुक्त है।**

3. डीड़वाना झील -

- यह झील **नागौर जिले के डीड़वाना** में स्थित है।
- डीड़वाना में लवणीय पानी की क्यारियाँ बनाकर उसे सुखाकर नमक प्राप्त किया जाता है । **इस नमक ब्राइन नमक** कहा जाता है। इस झील से प्राप्त नमक **खाने योग्य नहीं** है।
- इस झील में राजस्थान सरकार द्वारा **राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स नामक दो उद्योग** स्थापित किए गए हैं जो **कृत्रिम रूप से कागज के उत्पादन का निर्माण करते हैं ।** इसके अलावा इस नमक का उपयोग चमड़ा उद्योग में भी होता है।

- कृत्रिम रूप से कागज का उत्पादन करने के लिए **सोडियम सल्फेट का निर्माण इसी झील के** द्वारा किया जाता है।
- इस झील का क्षेत्रफल 4 वर्ग किलो मीटर है।
- यहाँ का नमक विभिन्न रासायनिक क्रियाओं में प्रयुक्त होता है।
- Na_2SO_4 वाले नमक का उपयोग चमड़ा साफ करने में, कागज गलाने में किया जाता है।

5. लूणकरणसर झील -

- यह झील राजस्थान के **बीकानेर जिले में** स्थित अत्यंत छोटी झील है।
- छोटी होने के कारण यहाँ से थोड़ी बहुत मात्रा में निकलने वाले नमक से स्थानीय लोगों को ही आपूर्ति हो पाती है।

- **लूणकरणसर "मूंगफली" के लिए प्रसिद्ध होने के कारण "राजस्थान का राजकोट"कहलाता है।**

राजस्थान में अन्य खारे पानी की झीलें निम्न है :-

- रेवासा झील सीकर में स्थित है।
- तालछापर झील चूरू में स्थित है।
- **डेगाना झील नागौर में स्थित है।**
- फलौदी झील जोधपुर में स्थित है।
- कावोद झील जैसलमेर में स्थित है।
- पोकरण झील जैसलमेर में स्थित है।
- कुचामन झील नागौर में स्थित है इत्यादि।

(ब)<u>राजस्थान में मीठे पानी की झीलें -</u>

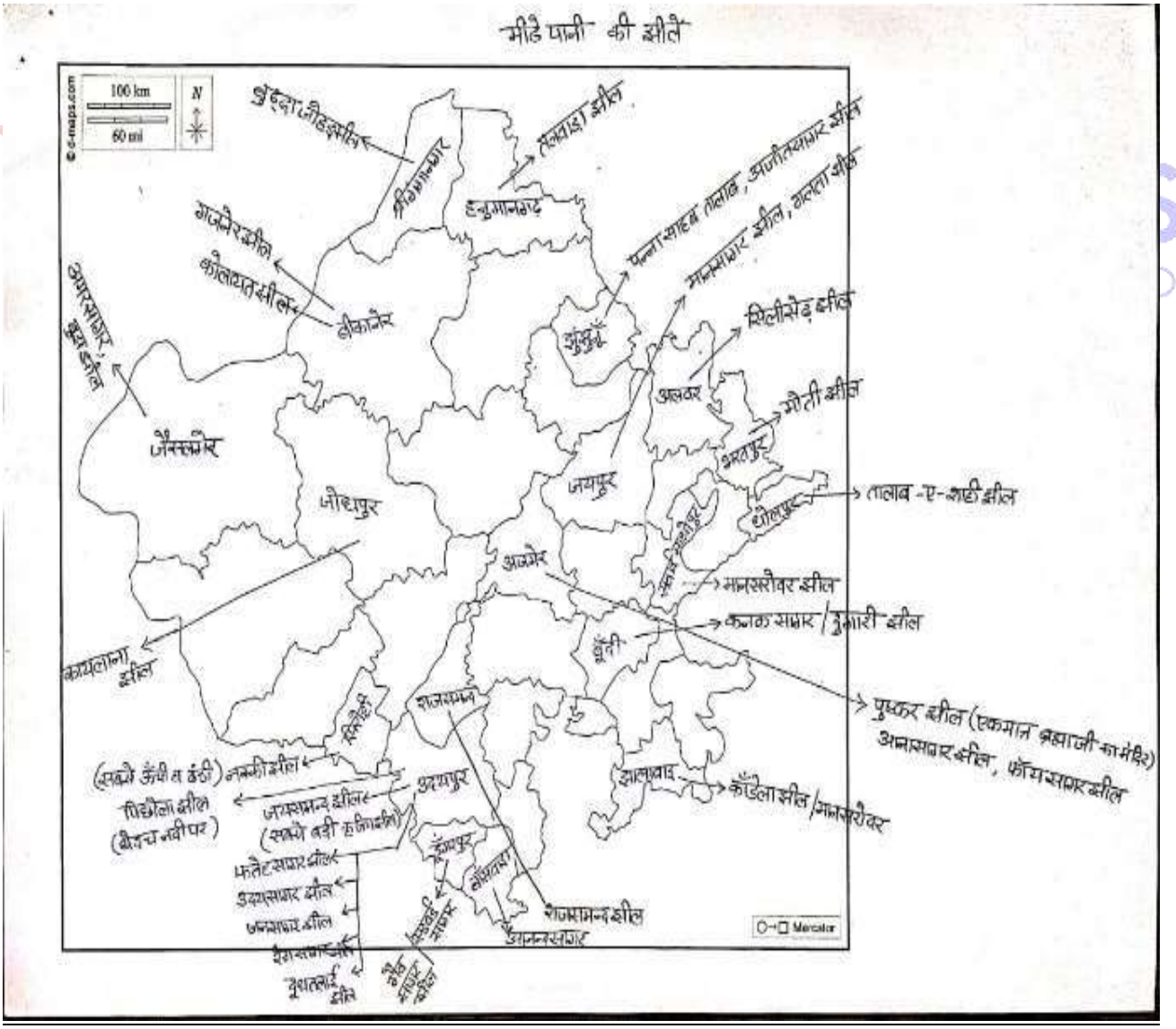

शोर्ट ट्रिक

राजस्थान की मीठे पानी की झीलों के नाम:-

"जयराज, अना, नडीसि कोका फतेह कर"

सूत्र		झीलें
जय	-	जयसमन्द झील
राज	-	राजसमन्द झील
अना	-	अनासागर झील
न	-	नक्की झील
डी	-	डीड़वाना झील
सि	-	सिलिसेढ़ झील
को	-	कोलायत झील
का	-	कायलाना झील
फतेह	-	फतेहसागर झील

विस्तृत वर्णन -

I. पुष्कर झील -

- राजस्थान राज्य के **अजमेर जिले के पुष्कर नामक स्थान पर** (अजमेर शहर से ।। किलो मीटर दूर) स्थित पुष्कर झील एक प्रसिद्ध झील है।
- ऐसा माना जाता है कि इस झील **का निर्माण पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा** करवाया गया था इसलिए इस झील का नाम "पुष्कर झील" पड़ा, **लेकिन भौगोलिक मान्यताओं के अनुसार इस झील का निर्माण ज्वालामुखी से हुआ है इसलिए इसे क्रेटर झील भी कहा जाता है।**
- **यह राजस्थान की प्राचीन, प्राकृतिक एवं सबसे पवित्र झील है।**
- **इस झील के किनारे प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मंदिर स्थित है** ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माजी मंदिर में मूर्ति आद्यगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित की गई थी । इस मंदिर का निर्माण दसवीं सदी में पंडित गोकुल चंद पारीक ने करवाया था। **(नोट :- राजस्थान के बाड़मेर जिले में आसोतरा नामक स्थान पर एक अन्य ब्रह्माजी का मंदिर है।)**
- **इस झील को अन्य नामों** से भी जाना जाता है, जैसे - **कोंकण तीर्थ, तीर्थ स्थलों का मामा** 52 घाट मंदिरों की नगरी, प्रयागराज का गुरु, हिन्दुओं का पांचवा तीर्थ स्थल इत्यादि।
- इस झील के किनारे कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेला लगता है । यह मेला राजस्थान का सबसे बड़ा रंगीन मेला है जो प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को विशाल मेले के रूप में आयोजित किया जाता है। यह मेला राजस्थान में आय की दृष्टि से सबसे बड़ा मेला है।
- महाभारत के बाद पांडवों ने यहाँ स्नान किया था तथा कौरव व पांडवों का मिलन भी इसी झील के तट पर हुआ था।
- प्राचीन काल में विश्वामित्र ने इसी झील के किनारे तपस्या की थी।
- वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना एवं वेदों का संहिताकरण इसी झील के किनारे किया था।
- भगवान राम ने अपने पिता दशरथ का पिंडदान इसी झील में किया था।
- पुष्कर झील में कुल 52 घाट हैं इसलिए इसे बावन घाटा के नाम से भी जाना जाता है इसमें एक महिला घाट भी है जो महिलाओं के स्नान के लिए बनवाया गया था जिसका निर्माण मैडम मैरी के द्वारा करवाया गया था ।
- **इस झील के तट पर प्रसिद्ध वराह मंदिर है जिसका निर्माण आनाजी (अर्णोराज) के द्वारा** करवाया गया था।
- इसी झील के तट पर द्रविड़ शैली में निर्मित रंगाजी रंगनाथ जी बैकुंठ मंदिर है।
- इसी झील के समीप रत्नागिरी पर्वत पर सावित्री मंदिर भी स्थित है।
- **कालिदास ने अपने ग्रंथ "अभिज्ञान शाकुंतलम्" की रचना इसी झील के तट पर** की थी।
- **महात्मा गांधी की अस्थियां इसी झील में** प्रवाहित की गई थी इसीलिए इस झील को "**गांधी घाट**" के नाम से भी जाना जाता है ।
- इसी झील के समीप आमेर के मानसिंह प्रथम द्वारा निर्मित मान पैलेस है वर्तमान में यहाँ मान पैलस होटल का संचालन किया जा रहा है।
- इस झील के आस-पास छोटे-बड़े लगभग 400 मंदिर स्थित है इस कारण **पुष्कर झील को मंदिरों की नगरी**" भी कहा जाता है।

निवासी मोनिका खन्ना ने इस रेलगाड़ी की आंतरिक सज्जा की है

- इस गाड़ी में 14 कोच 2 रेस्तरा(द-महाराजा और द-महारानी हैं इसका रूट दिल्ली जयपुर सवाई माधोपुर चित्तौड़ उदयपुर जैसलमेर जोधपुर से आगरा तक है
- **ब्रोडगेज की पैलेस ऑन व्हील्स का प्रारंभ सितंबर 1995 में किया गया था।**

हेरिटेज ऑन व्हील्स(Heritage on Wheels)

हेरिटेज ऑन व्हील रेल का प्रारंभ 17 फरवरी 2009 से राजस्थान में किया गया था पश्चिमी मध्य रेलवे जबलपुर द्वारा रेलवे का पहला इंजीनियरिंग सुपरवाइजर ट्रेनिंग सेंटर कोटा में खोला है

राजस्थान में रेलवे मार्गों की लम्बाई (मार्च, 2019)

रेलमार्ग	कुल लम्बाई	प्रतिशत
ब्रॉडगेज	4969.68 किमी.	83.70%
मीटरगेज	880.56 किमी.	14.83%
नैरोगेज	86.76 किमी.	1.46%
कुल	5937 किमी	100%

मोनोरेल(Monorail)

- **राजस्थान के छः शहरों जयपुर जोधपुर कोटा उदयपुर अजमेर और बीकानेर में मोनो रेल चलाने का प्रस्ताव मलेशियन कंपनी एम. रेल इंटरनेशनल द्वारा राज्य सरकार को दिया गया है।**
- इसके तहत दो डिब्बों वाली मोनो रेल का संचालन मुख्यमंत्री की अध्यक्षता वाले राजस्थान निवेश प्रोत्साहन बोर्ड की देखरेख में किया जाएगा कंपनी द्वारा राज्य में रेल कोच असेंबली स्थापित की जाएगी

थार एक्सप्रेस(Thar express)

- **भारत और पाकिस्तान (India and Pakistan) के मध्य में थी संबंधों की स्थापना करने के उद्देश्य से थार एक्सप्रेस रेल का संचालन राज्य में किया गया यह रेल जोधपुर मुनाबाव बाड़मेर से खोखरापार(पाकिस्तान) के मध्य चलाई गई थी।**
- यह ट्रेन 1965 में भारत-पाक युद्ध के दौरान इसे बंद बाड़मेर जिले के मुनाबाव से पाकिस्तान में खोखरापार होते मीरपुरखास तक 18 फरवरी 2006 से चालू किया गया था कर दिया गया था।
- अब पुनः चालू कर जोधपुर से मुनाबाव तक इसे लिंक एक्सप्रेस और मुनाबाव से जीरो पॉइंट तक इसे थार एक्सप्रेस कहा जाता है

वायु परिवहन

- राजस्थान में सर्वप्रथम 1929 में जोधपुर के महाराजा श्री उम्मेदसिंहने फ्लाइंग क्लब खोला था।
- **एयरफोर्स फ्लाईंग कॉलेज जोधपुर** में स्थित है।
- नागरिक उड्डयन गतिविधियों के क्रियान्वयन हेतु **राज्य में । अप्रैल, 2012 को नागरिक उड्डयन विभाग के** नियंत्रणाधीन निदेशालय नागरिक विमानन स्थापित किया गया।
- ध्यातव्य रहे- वर्तमान में राज्य में कुल 32 हवाई पट्टीयां हैं तो दिल्ली मुम्बई इण्डस्ट्रियल कॉरपोशन द्वारा **अलवर की कोटकासिम तहसील में ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट प्रस्तावित है।**
- **राज्य सरकार द्वारा सभी जिलों को हवाई सुविधा से जोड़ने हेतु मैसर्स ओआईएस एयरो स्पेस प्रा.लि. नई दिल्ली के साथ 28 अक्टूबर, 2014 को MOU** किया जो मुख्य पर्यटक स्थलों को सेवाएँ उपलब्धकरायेगा।
- ध्यातव्य रहे- देश की पहली वरिष्ठ नागरिक हवाई तीर्थ यात्रा योजना का शुभारम्भ राजस्थान से किया गया है।
- राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से छोटे शहरों को हवाई सेवा से जोड़ने के लिए वीजीएफ के आधार पर अन्तराज्यीय हवाई सेवा योजना शुरू की गई है।
- जयपुर से कोटा हेतु सीधी हवाई सेवा 18 अगस्त, 2017 से प्रारम्भ कर दी गई है। सितम्बर माह में कोटा से नई दिल्ली की हवाई सेवा भी शुरू कर दी गई ।
- शीघ्र ही अजमेर, जैसलमेर एवं रणथम्भौर व आगरा से तथा बीकानेर को सीधे नई दिल्ली से हवाई सेवाओं से जोड़ने की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है।

राज्य के प्रमुख वायुमार्ग हैं

दिल्ली-आगरा-जयपुर, दिल्ली-जयपुर, जोधपुर-उदयपुर-अहमदाबाद मुम्बई, जयपुर-उदयपुर-ओरंगाबाद-मुम्बई, जयपुर, बनारस-कोलकाता, जयपुर-हैदराबाद, जयपुर-बेंगलुरु, जयपुर-गोहाटी, जयपुर-वाराणासी, जयपुर लखनऊ, जयपुर-मुम्बई-सिंगापुर, जयपुर-मस्कट, जयपुर-शरजहाँ , जयपुर आबूधाबी एवं जयपुर-दुबई, जयपुर-क्वालालाम्पुर है।

स्टेट हवाई सेवा इन्द्रा

- राज्य में जयपुर से उदयपुर जोधपुर हेतु कोई सीधी उड़ान सेवा संचालित नहीं हो रही थी। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से छोटे शहरों को हवाई सेवा से जोड़ने के लिए VGF के आधार पर 'Intra-State हवाई सेवा योजना प्रारंभ की गई है।
- इस योजना के तहत जोधपुर, उदयपुर व बीकानेर को जयपुर से जोड़ा गया है। शीघ्र ही कोटा, अजमेर एवं रणथम्भौर (सवाई माधोपुर) को भी जयपुर के साथ हवाई सेवा से जोड़ा जायेगा।
- राज्य में इन्द्रा स्टेट हवाई सेवा संचालित करवाये जाने की घोषणा के अनुसार नागरिक उड्डयन विभाग द्वारा निविदाएं आमंत्रित की जाकर सफल निविदादाता मैसर्स सुप्रीम ट्रांसपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन प्रा. लिमिटेड से दिनांक 08.09.2016 को अनुबंध सम्पादित किया गया।
- इस सेवा में राज्य सरकार द्वारा सेवा प्रादाता संस्था को राशि 121/- रूपये प्रति · नोटिकल माइल की दर से सब्सिडी का भुगतान किया जाना निर्धारित है। उक्त संस्था द्वारा दिनांक 04 अक्टूबर, 2016 से 09 सीट वाले विमान ।

  सेवा निम्नांकित मार्गो पर संचालित की गई:

  1.जयपुर से उदयपुर एवं जोधपुर

  2. जयपुर से बीकानेर एवं कोटा

  3. अहमदाबाद-जोधपुर-जैसलमेर

  4. उदयपुर जोधपुर-किशनगढ़

  5. जयपुर से श्रीगंगानगर (10 जुलाई, 2018)
- माह अगस्त 2018 में उक्त संस्था का विमान श्रीगंगानगर में रनवे पर उतरते समय क्षतिग्रस्त हो जाने पश्चात् से यह सेवा संचालित नही हो रही है। 11 अप्रैल, 2018 से रणथम्भौर, कोटा व किशनगढ़ (अजमेर) को इन्ट्रास्टेट हवाई सेवा योजना से जोड़ दिया गया है।
- राजस्थान के किशनगढ़ एयरपोर्ट से 1 अप्रैल, 2019 को स्पाइस जेट एयरलाइंस द्वारा किशनगढ़ - अहमदाबाद हवाई मार्ग शुरू हुआ। 2 नवम्बर, 2019 से दिल्ली-आगरा-जैसलमेर जम्मू-एयरवेज द्वारा हवाई सेवा शुरू कर दी गई है।

रीजनल कनेक्टीविटी स्कीम

- **भारत सरकार द्वारा वर्ष 2016 में रीजनल कनेक्टीविटी स्कीम लागू की गयी थी।** इस स्कीम का मुख्य उद्देश्य देश में उपलब्ध अनुपयोगी/अल्पउपयोगी एयरपोर्ट को हवाई सेवा से जोड़ना तथा देश के आम नागरिक को कम लागत पर उड़ान की सुविधा उपलब्ध कराया जाना है।
- राजस्थान राज्य द्वारा इस स्कीम में सहभागिता दर्शाते हुए नागरिक उड्डयन मंत्रालय, भारत सरकार के साथ दिनांक 20.03.2017 को एम.ओ.यू. संपादित किया गया था। तथा वी.जी.एफ. के रुप में अब तक राशि 82.88 लाख का भुगतान किया गया है।
- एम.ओ.यू. के अनुसार प्रथम चरण की निविदा में प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर राज्य में इस स्कीम के अर्न्तगत वर्तमान में निम्न मार्गो पर वायु सेवा संचालित है ।

  1. जयपुर उदयपुर (वाया जोधपुर)- जयपुर (04.10.2016)

  2. कोटा-जयपुर-कोटा (अगस्त, 2017)

  3. दिल्ली-बीकानेर-दिल्ली (26.09.2017 से प्रारम्भ

  4. जयपुर-जैसलमेर-जयपुर (29.10.2017 से प्रारम्भ)

  5. जयपुर-आगरा-जयपुर (08.12.2017 से प्रारम्भ)

  6. किशनगढ़- हैदराबाद-किशनगढ़

  7. अहमदाबाद - किशनगढ़-अहमदाबाद

"सारांश"

- राजस्थान में सर्वप्रथम 1952 में राजकीय बस सेवा टोंक से शुरू की गयी थी।
- मार्च 2020 तक राज्य में सड़कों का घनत्व 78.61 किलोमीटर प्रति 100 वर्ग किलोमीटर है।
- राजस्थान में सर्वाधिक सड़कों का घनत्व दौसा व राजसमंद जिले में है। राजस्थान में सड़कों का न्यूनतम घनत्व जैसलमेर जिले में है।
- राजस्थान में कुल 48 राष्ट्रीय राजमार्ग हैं।
- राजस्थान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय मार्ग NH-11 है, तथा सबसे छोटा राष्ट्रीय मार्ग NH-919 है।
- वर्ष 2019 -20 की बजट घोषणा के अनुसार आगामी 5 वर्षों में प्रत्येक ग्राम पंचायत में वॉल टू वॉल विकास पथ का निर्माण किया जाना है।
- राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की स्थापना 1 अक्टूबर 1964 को हुई। इसका मुख्यालय जयपुर में है।
- राजस्थान का पहला 6 लेन हाईवे जयपुर किशनगढ़ है।
- राज्य में रेलमार्ग 67, 415 किलोमीटर लंबा है ।
- राजस्थान में प्रथम रेल (मीटरगेज लाइन) जयपुर रियासत में आगरा फोर्ट से बांदीकुई के बीच अप्रैल 1874 में चलाई गई।
- 'धार एक्सप्रेस' मुनाबाव (बाड़मेर) से खोखरापार (पाकिस्तान)के मध्य चलती है। जोधपुर से मुनाबाव (250 किमी.) जाने वाली ट्रेन 'लिंक एक्सप्रेस' कहलाती है।
- वर्तमान में राज्य में कुल 32 हवाई पट्टियाँ है। अलवर की कोटकासिम तहसील में ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट प्रस्तावित है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. किशनगढ़ हवाई अड्डे का उद्घाटन कब किया गया?

(a) अक्टूबर, 2017 (b) अक्टूबर,2018
(c) दिसंबर, 2017 (d) दिसंबर,2018

उत्तर (A)

2. राजस्थान में प्रथम रेलमार्ग को किस वर्ष खोला गया था।

(a) 1874 (b) 1853
(c) 1893 (d) 1899

उत्तर- (A)

3. राजस्थान में परिवहन विभाग का आदर्श वाक्य क्या है ?

(a) चरैवेति सुरक्षति (b) चरैवेति चरैवेति
(c) चलंती शीघ्रम (d) चरैवेति शीघ्रम

उत्तर- (B)

4. राजस्थान में 'ग्रामीण गौरव पथ योजना' का शुभारंभ किस बर्ष हुआ था ?

(a) 2014-15 (b) 2015-16
(c) 2018-19 (d) 2019-20

उत्तर (A)

5. राजस्थान का सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग निम्न में से किस स्थान को नहीं जोड़ता है।

(a) रेवाड़ी (b) अलवर
(c) धारूहेड़ा (d) मानेसर

उत्तर -(d)

6. राजस्थान राज्य पथ परिवहन की स्थापना कब हुई।

अध्याय – 2

मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्

- मुख्यमंत्री किसी राज्य की कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान होता है । वह राज्य विधानसभा का नेता होता है । राज्य की सर्वोच्च कार्यपालिका शक्ति मुख्यमंत्री के हाथों में है । वह राज्य का वास्तविक शासक/तथ्यत प्रमुख / डी-फैक्टो हेड होता है ।
- मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल के द्वारा संविधान के **अनुच्छेद 164 (1)** के तहत की जाती है ।
- सामान्यत , राज्यपाल बहुमत प्राप्त दल के नेता को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है । लेकिन यदि चुनावों में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है , उस स्थिति में राज्यपाल स्वविवेक से मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। उसे एक माह के भीतर सदन में विश्वास मत प्राप्त करने के लिए कहता है।

  राज्यपाल स्वविवेक द्वारा मुख्यमंत्री की नियुक्ति ऐसे समय पर करता है जब कार्यकाल के दौरान किसी मुख्यमंत्री की मृत्यु हो जाए और कोई उत्तराधिकारी तय नहीं हो या चुनावों में किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ हो ।

NOTE- केन्द्र शासित प्रदेशों में (जहाँ विधानसभा है) मुख्यमंत्रियों की नियुक्ति , राष्ट्रपति करता है । वर्तमान में भारत के तीन केन्द्र शासित प्रदेशों क्रमशः पुदुच्चेरी, दिल्ली और जम्मू- कश्मीर में विधानसभाओं का प्रावधान है ।

- **अनुच्छेद 164 (3)** मुख्यमंत्री व मंत्रियों को शपथ राज्यपाल दिलाता है । राज्य का मुख्यमंत्री कार्यग्रहण से पूर्व राज्यपाल के समक्ष पद व गोपनीयता की शपथ ग्रहण करता है। मुख्यमंत्री व मंत्रियों की शपथ का प्रारूप **भारतीय संविधान की अनुसूची 3** में मिलता है ।

अनुच्छेद 164 (4) मुख्यमंत्री एवं मंत्रियों की योग्यता भारतीय संविधान में मुख्यमंत्री पद के लिए योग्यताएँ आवश्यक है जो एक मंत्री पद के लिए होती है । जैसे– (1) न्यूनतम आयु 25 वर्ष हो । (2) राज्य विधानमण्डल के दोनों में से किसी एक सदन का सदस्य हो ।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानमण्डल के किसी भी सदन का सदस्य न भी हो तो 6 माह तक मुख्यमंत्री रह सकता है । 6 माह के भीतर उसे विधानमण्डल के किसी एक सदन की सदस्यता ग्रहण करनी पड़ती है अन्यथा त्यागपत्र देना पड़ता है । मुख्यमंत्री सामान्यतः विधानमण्डल के निम्न सदन (विधान सभा) का सदस्य होता है, लेकिन उच्च सदन (विधान परिषद्) के सदस्य को भी मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है यदि उस राज्य में द्विसदनात्मक विधान मण्डल है तो ।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानपरिषद् का सदस्य है तो वह

(i) राष्ट्रपति के चुनाव में भाग नहीं ले सकता।

(ii) वह अविश्वास प्रस्ताव पर वोट नहीं कर सकता है क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव विधानसभा में लाया जाता है ।

- **अनुच्छेद 164 (5)** मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों व कार्यकाल

  मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों का निर्धारण राज्य विधानमण्डल द्वारा किया जाता है । वर्तमान में राजस्थान के मुख्यमंत्री को 75,000 रु प्रतिमाह वेतन मिलता है । (1 अप्रेल , 2019 के बाद) स्मरणीय तथ्य : मुख्यमंत्री का कार्यकाल 5 वर्ष होता है , परन्तु वह राज्यपाल के प्रसादपर्यंत अपने पद पर बना रहता है । अर्थात जब तक कि उसका विधानसभा में बहुमत है । लेकिन यदि मुख्यमंत्री विधानसभा में अपना बहुमत खो देता है तो उसे त्यागपत्र दे देना चाहिए अन्यथा राज्यपाल उसे बर्खास्त कर सकता है । मुख्यमंत्री अपना त्यागपत्र राज्यपाल को देता है । और मुख्यमंत्री का त्यागपत्र समस्त मंत्रिपरिषद् का त्यागपत्र माना जाता है ।

  अनुच्छेद 164 (2) - राज्य की मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है ।

मुख्यमंत्री के कार्य एवं शक्तियाँ
मंत्रिपरिषद् के संबंध में

- मुख्यमंत्री की सलाह से राज्यपाल द्वारा मंत्रियों की नियुक्ति की जाती है ।

- *मुख्यमंत्री , मंत्रियों के मध्य विभागों का बंटवारा करता है और उनमें फेरबदल भी करता है । मतभेद होने पर वह किसी भी मंत्री को त्यागपत्र देने के लिए कह सकता है या राज्यपाल को उसे बर्खास्त करने का परामर्श दे सकता है ।*
- *मुख्यमंत्री, मंत्रिपरिषद् एवं मंत्रिमण्डल की बैठकों की अध्यक्षता करता है ।*
- ***NOTE- मुख्यमंत्री की अनुपस्थिति में सबसे वरिष्ठ मंत्री मंत्रिमण्डल की अध्यक्षता करता है ।***
- *वह सभी मंत्रियों को उनके कार्यों में परामर्श देता है तथा उनके कार्यों पर नियंत्रण भी रखता है ।*
- *मुख्यमंत्री , राज्यपाल और मंत्रिपरिषद् के बीच की कड़ी के रूप में कार्य करता है ।*

अनुच्छेद 164 (1) क - *इस अनुच्छेद को 91 वें संविधान संशोधन 2003 द्वारा जोड़ा गया । इसमें राज्य मंत्रिपरिषद् का आकार निश्चित किया गया। राज्य मंत्रिपरिषद् में मुख्यमंत्री सहित अधिकतम मंत्री उस राज्य की कुल विधानसभा सीटों का 15 % तथा मुख्यमंत्री सहित न्यूनतम मंत्री 12 होंगे ।*

<u>राज्यपाल के संदर्भ में</u>

अनुच्छेद 167- *इसमें मुख्यमंत्री के संवैधानिक कर्त्तव्यों का उल्लेख मिलता है ।*

(i) वह मंत्रिपरिषद् द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों के लिए सभी निर्णयों तथा विधायन के प्रस्तावों के बारे में राज्यपाल को सूचित करें।

(ii) राज्यपाल द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों अथवा विधायन प्रस्तावों के बारे में माँगे जाने पर सूचना प्रदान करना।

(iii) यदि राज्यपाल चाहे तो मंत्रिपरिषद् के समक्ष किसी ऐसे मामले को विचारार्थ रखे जिस पर निर्णय तो किसी मंत्री द्वारा लिया जाना है लेकिन जिस पर मंत्रिपरिषद् विचार नहीं किया है ।

NOTE- राज्य की प्रमुख संवैधानिक संस्था जैसेः- राज्य के महाधिवक्ता (अनुच्छेद-165), राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद 243 I-पंचायतीराज, अनुच्छेद 243 Y- नगर निकायों के लिए) तथा राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद-316) राज्य निर्वाचन आयुक्त (अनुच्छेद 243 K-पंचायतीराज व अनुच्छेद 243 ZA- नगर निकायों के लिए) की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा मंत्रिपरिषद की सलाह (विशेषतया मुख्यमंत्री) की जाती है।

NOTE-राज्य के प्रमुख सांविधिक/ वैधानिक निकायों जैसेः- राजस्थान मानवाधिकार आयोग, राजस्थान सुचना आयोग के अध्यक्षों व सदस्यों तथा लोकायुक्त संस्था के अध्यक्ष की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा एक चयन समिति की सिफारिश पर की जाती है जिसका अध्यक्ष मुख्यमंत्री होता।

NOTE-राजस्थान महिला आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति राज्य सरकार (मुख्यमंत्री) द्वारा की जाती है।

<u>राज्य विधानमण्डल के संबंध में</u>

- *मुख्यमंत्री , राज्यपाल को किसी भी समय विधानसभा विघटित करने की सिफारिश कर सकता है ।*
- *मुख्यमंत्री ही राज्य विधानसभा के पटल पर सरकार की नीतियों की घोषणा करता है ।*
- *मुख्यमंत्री , राज्यपाल को सत्राहूत व सत्रावसान के संबंध में सलाह देता है ।*

<u>मुख्यमंत्री के अन्य कार्य</u>

- *राज्य आयोजना बोर्ड के अध्यक्ष होते है ।*
- *अंतर्राज्यीय परिषद (अनुच्छेद 263) के सदस्य होते है।*
- *राष्ट्रीय विकास परिषद के सदस्य होते है ।*
- *नीति आयोग के सदस्य होते है ।*
- *वह संबंधित क्षेत्रीय परिषदों के क्रमवार उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते है तथा एक समय में इनका कार्यकाल1 वर्ष का होता है ।*
- *मुख्यमंत्री राज्य सरकार का मुख्य प्रवक्ता तथा आपातकाल के समय वह राजनीतिक स्तर पर मुख्य प्रबंधक होता है ।*

<u>राजस्थान में मुख्यमंत्री</u>

<u>पं. हीरालाल शास्त्री</u>

- *30 मार्च, 1949 को राजस्थान के एकीकरण के चतुर्थ चरण के समय जब 15 देशी रियासतों का*

विलय कर वृहद राजस्थान संघ का निर्माण किया गया तब जयपुर रियासत के पूर्व प्रधानमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री को 30 मार्च, 1949 को ही नये राज्य का प्रधानमंत्री मनोनीत किया गया।

- उन्होंने राजस्थान के प्रधानमंत्री के तौर पर 5 जनवरी, 1951 तक कार्य किया। देश में 26 जनवरी, 1950 को संविधान के लागू होने के बाद प्रधानमंत्री पद का नाम बदल कर मुख्यमंत्री कर दिया गया।
- हीरालाल शास्त्री राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री रहे।
- हीरालाल शास्त्री के समय 30 मार्च, 1949 को राजस्थान में संभागीय व्यवस्था की शुरुआत की गईं।
- हीरालाल शास्त्री एक बार लोकसभा सांसद भी रहे।

सी.एस. वेंकटाचार्य (कदांबी शेषाटार वेंकटाचार्य)

- हीरालाल शास्त्री को लेकर मतभेद पैदा हो गया और अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से उन्हें पद से हटा दिया गया। उनकी एवज में आई.सी.एस. अधिकारी श्री सी.एस. वेंकटाचारी को मुख्यमंत्री का कार्यभार दे दिया गया।
- राजस्थान के दूसरे मनोनीत मुख्यमंत्री (6 जनवरी, 1951 से 25 अप्रैल, 1951) बने।
- सी.एस. वेंकटाचार्य रियासती काल में बीकानेर व जोधपुर के प्रधानमंत्री भी रहे।

जय नारायण व्यास

- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो कि मनोनीत (26 अप्रैल, 1951 से 3 मार्च, 1952) व निर्वाचित (1 नवम्बर, 1952 से 13 नवम्बर, 1954) दोनों रहे।
- प्रथम विधानसभा चुनाव में दो सीटों (जोधपुर शहर - बी व जालौर - ए) से चुनाव लड़ा, लेकिन दोनों सीटों से हार गये। लेकिन बाद में किशनगढ़ सीट से चांदमल मेहता को इस्तीफा दिलवाकर सीट खाली की तथा उपचुनाव जीतकर राजस्थान के दूसरे निर्वाचित मुख्यमंत्री बने।
- जयनारायण व्यास एक बार राज्य सभा सांसद भी रहे।
- जयनारायण व्यास, मुख्यमंत्री बनने के पूर्व किसी भी मंत्रिपरिषद् में मंत्री नहीं रहे।

NOTE- राजस्थान में तीन मनोनीत मुख्यमंत्री बने (1) हीरालाल शास्त्री (2) सी.एस. वेंकटाचार्य (3) जयनारायण व्यास

टीकाराम पालीवाल

- टीकाराम पालीवाल प्रदेश के पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री (3 मार्च, 1952 से 1 नवम्बर, 1952) बने। इससे पहले के सभी मुख्यमंत्री मनोनीत किये गए थे।
- जयनारायण व्यास के किशनगढ़ सीट से उपचुनाव जीतने के बाद इनको मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र देना पड़ा व इन्हें उपमुख्यमंत्री बनाया गया।
- एकमात्र व्यक्ति जो राजस्थान के मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री दोनों पदों पर रहे।
- यह राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री व प्रथम उपमुख्यमंत्री बने।
- यह लोकसभा व राज्यसभा सांसद भी रहे।

मोहनलाल सुखाड़िया

- सुखाड़िया जी ने कांग्रेस विधायक दल के नेता के चुनाव में जयनारायण व्यास को हराकर मात्र 38 साल की उम्र में प्रदेश का सबसे युवा मुख्यमंत्री बनने का गौरव प्राप्त किया।
- 13 नवम्बर, 1954 को उन्होंने राज्य की कमान संभाली।
- इस के बाद वे वर्ष 1957 में दूसरी बार, वर्ष 1962 में तीसरी बार और वर्ष 1967 में लगातार चौथी बार मुख्यमंत्री बने।
- चौथी बार उन्हे अविश्वास प्रस्ताव से पद से हटाने का प्रयास किया गया लेकिन 26 अप्रैल, 1967 को उन्होंने अपना बहुमत सिद्ध करने के बाद 8 जुलाई, 1971 को पद से इस्तीफा दे दिया।
- सुखाड़िया जी को आधुनिक राजस्थान का निर्माता कहा जाता है।
- इनके पिता पुरुषोत्तमदास सुखाड़िया चर्चित क्रिकेटर थे।
- सर्वाधिक कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री, 1954 से 1971 तक (17 वर्ष), 4 बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे। इनके समय 2 अक्टूबर, 1959 को नागौर से पंचायतीराज की शुरुआत हुई तथा अप्रैल, 1962 में संभागीय व्यवस्था को बंद किया गया।

उत्तर – (2)

राजस्थान के मुख्यमंत्री

क्र.	मुख्यमंत्री	कार्यकाल
1.	श्री हीरालाल शास्त्री	07.04.1949 - 05.01.1951
2.	श्री सी.एस. वैंकटाचार्य	06.01.1951 - 25.04.1951
3.	श्री जयनारायण व्यास	26.04.1951 - 03.03.1952
4.	श्री टीकाराम पालीवाल	03.03.1952 - 31.10.1952
5.	श्री जयनारायणव्यास	01.11.1952 - 12.11.1954
6.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	13.11.1954 - 11.04.1957
7.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	11.04.1957 - 11.03.1962
8.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	12.03.1962 - 13.03.1967
9.	राष्ट्रपति शासन	13.03.1967- 26.04.1967
10.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	26.04.1967- 09.07.1971
11.	श्री बरकतुल्लाखां	09.07.1971- 11.10.1973
12.	श्री हरि देव जोशी	11.10.1973 - 29.04.1977
13.	राष्ट्रपति शासन	30.04.1977- 21.06.1977
14.	श्री भैरोंसिंह शेखावत	22.06.1977 - 16.02.1980
15.	राष्ट्रपति शासन	17.02.1980 - 05.06.1980
16.	श्री जगन्नाथ पहाडिया	06.06.1980- 13.07.1981
17.	श्री शिवचरण माथुर	14.07.1981- 23.02.1985
18.	श्री हीरालाल देवपुरा	23.02.1985 - 10.03.1985
19.	श्री हरि देव जोशी	10.03.1985 - 20.01.1988
20.	श्री शिव चरण माथुर	20.01.1988- 04.12.1989
21.	श्री हरि देव जोशी	04.12.1989- 04.03.1990
22.	श्री भैरों सिंह शेखावत	04.03.1990 - 15.12.1992
23.	राष्ट्रपति शासन	15.12.1992 - 03.12.1993
24.	श्री भैरोंसिंह शेखावत	04.12.1993 - 01.12.1998
25.	श्री अशोक गहलोत	01.12.1998 - 08.12.2003
26.	श्रीमती वसुन्धरा राजे	08.12.2003- 13.12.2008
27.	श्री अशोक गहलोत	13.12.2008 - 13.12.2013
28.	श्रीमती वसुन्धरा राजे	13.12.2013 - 17.12.2018
29.	श्री अशोक गहलोत	17.12.2018 से लगातार...

अध्याय – 6

जिला प्रशासन

- प्रशासनिक सुगमता की दृष्टि से सभी राज्यों को छोटी - छोटी इकाइयों में विभक्त किया गया है जिन्हें जिला कहा जाता है ।
- सन् 1772 में अंग्रेजी शासन काल में गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स द्वारा ' कलेक्टर ' का पद सृजित करने के साथ ही आधुनिक जिला प्रशासन का एक नया अध्याय प्रारंभ हुआ ।
- स्वतंत्रता के बाद जिला को भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था की एक महत्त्वपूर्ण इकाई के रूप में अपनाया गया ।
- भारत के संविधान में भी जिला शब्द का प्रयोग किया गया है । संविधान में जिला शब्द का अनुच्छेद 233 में जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति के प्रसंग में प्रयोग किया गया है । पंचायती राज के लिए जिला परिषद् का प्रयोग अनुच्छेद 243 में किया गया है ।

जिला प्रशासन के महत्त्व के कारण

1. जिला प्रशासन तथा जिलाधीश के पद की छवि भारतीय जन साधारण के मन में परम्परागत श्रेष्ठता के रूप में अंकित है ।
2. भौगोलिक दृष्टि से संतुलित क्षेत्र स्थिति के कारण प्रशासनिक दृष्टि से सुविधापूर्ण तथा क्षेत्रीय स्तर तक पहुँच बनाए रखता है
3. जिला मुख्यालय तक आम आदमी का आना - जाना आसानी से होता रहता है ।
4. राज्य सरकार के समस्त कार्यालय प्रायः जिला स्तर पर स्थापित होने के कारण राज्य की राजधानी से समन्वय स्थापित करने में सुविधा रहती है ।
5. ऐतिहासिक निरन्तरता के साथ - साथ जिला एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान तथा अपनत्व का बोध कराता है ।
6. जिला प्रशासन स्थानीय समस्याओं से अवगत रहता है ।

जिला प्रशासन के कार्य

- जिला प्रशासन राज्य प्रशासन और जन साधारण के बीच की एक कड़ी के रूप में कार्य करता है । राज्य सरकार के समस्त कार्यों को जिला स्तर पर स्थापित करने का कार्य जिला प्रशासन के द्वारा किया जाता है ।
- जिला प्रशासन के द्वारा निम्नलिखित कार्य किए जाते हैं

i. **नियामकीय कार्य :** – जिला प्रशासन के नियामकीय कार्यों के जिले में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना अपराधों पर नियंत्रण करना न्यायिक प्रशासन करना आयकर ब्रिकीकर चुंगीकर वनों पर कर एकत्रित करना , भू - राजस्व बकाया प्राप्त करना भूमि प्रशासन के सामान्य कार्य आदि करना सम्मिलित है ।

ii. **विकासात्मक कार्य करना** – जिला प्रशासन के द्वारा जिले में विभिन्न प्रकार के विकास से संबंधित कार्य किए जाते है । विकास के कार्यों के अंतर्गत जनकल्याणकारी और लोकहितकारी किए जाते हैं । जिले में कृषि उत्पादन बढ़ाना , सहकारिता पशुधन और मछली पालन को प्रोत्साहित करना , शिक्षा का प्रसार करना , समाज कल्याण के कार्य करना।

iii. **कार्मिक प्रशासन के कार्य करना-** कार्मिक प्रशासन के कार्यों भर्ती करना , प्रशिक्षण देना पदोन्नति करना , पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण करना और पुरस्कार एवं प्रोत्साहन देना आदि कार्यों को सम्मिलित किया जाता है ।

iv. **निर्वाचन संबंधी कार्य करना** - जिले में लोकसभा , विधानमण्डल , स्थानीय निकायों और पंचायती राज संस्थाओं के चुनावों को करवाना जिला प्रशासन का महत्त्वपूर्ण कार्य होता है ।

v. **स्थानीय संस्थाओं का संचालन करना :** – जिले में नगरीय संस्थाओं और ग्रामीण स्थानीय संस्थाओं के प्रशासन की सुचारू रूप से सचालित करने में जिला प्रशासन सहयोग प्रदान करता है । **vi.राहत**

कार्य करना : – जिले में प्राकृतिक आपदाओं जैसे- बाढ़ , भूकम्प , सूखा , अकाल तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं के समय जिला प्रशासन के द्वारा राहत कार्यों का संचालन किया जाता है । VII. **vii.**

समन्वय संबंधी कार्य करना : - जिला प्रशासन के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों , केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के विभिन्न कार्यालयों , स्वयसेवी संगठनों , निजी संगठनों , गैर सरकारी संगठनों तथा अन्य संबद्ध संस्थानों में समन्वय स्थापित करने का कार्य किया जाता है ।

जिला कलेक्टर

जिला प्रशासन में जिला कलेक्टर या डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर का पद अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है । जिला कलेक्टर भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) का अधिकारी होता है ।

जिला कलेक्टर के कार्य एवं भूमिका-

A. प्रशासनिक अधिकारी के रूप में : - एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में जिला कलेक्टर निम्नलिखित कार्यों को संपादित करता है

1. पोस्डकॉर्ब (POSDCORB) के कार्यों को करना।
2. जिला प्रशासन के विभिन्न अधिकारियों जैसे तहसीलदार , नायब तहसीलदार और जिले में कार्यरत अन्य राजपत्रित अधिकारियों को पदस्थापना करना और उनका स्थानांतरण करना ।
3. वार्षिक बजट का अनुमान प्रस्तुत करना ।
4. कार्मिक प्रशासन से संबंधित कार्य करना ।
5. जिले के राजस्व भवनों का निर्माण करना और उनकी देखभाल करना ।
6. वह जिला कोषालय का प्रभारी होता है और जिले की सभी ट्रेजरी या कोषालयों की सुरक्षा करना उसकी जिम्मेदारी है ।
7. सरकारी वाहनों , सर्किट हाउस और डाक बंगले पर नियंत्रण रखना ।
8. जिला प्रशासन की संपत्ति , धरोहर , भवनों , इमारतों और पर्यटक स्थलों की रक्षा करता है ।
9. जिला प्रशासन में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों का निरीक्षण करना ।
10. जिले के गाँवों और नगरीय क्षेत्रों का दौरा करके जनता की शिकायतों की सुनवाई करना ।

B. जिलाधीश के रूप में : - जिला कलेक्टर के रूप में वह राजस्व संग्रह का कार्य करता है । जो निम्न हैं-

1. भू- राजस्व की दरों का निर्धारण करना ।
2. भू- राजस्व को संग्रह करना ।
3. कृषि आयकर , ब्रिकी कर , सिंचाई कर , नहरी शुल्क तथा आयकर और अन्य करों को संग्रह करना।
4. कृषि ऋणों का वितरण और उनकी वसूली करना।
5. भू - अभिलेख से संबंधित सभी प्रकरणों को देखना।
6. भू - राजस्व से संबंधित मुकदमों की अपील पर सुनवाई करना ।
7. भूमि अधिग्रहण से संबंधित कार्य करना ।
8. स्टाम्प एक्ट का क्रियान्वयन करना ।
9. सरकारी संपत्ति और भूमि की रक्षा करना ।
10. उपखण्ड अधिकारी , तहसीलदार , नायब तहसीलदार , कानूनगो और पटवारी को भू - राजस्व के संबंध में मार्गदर्शन देना और उन पर नियंत्रण करना ।
11. कृषि से संबंधित सांख्यिकी और आँकड़ों को तैयार करवाना ।
12. जिला स्तर के स्थानीय अधिकारियों के राजस्व निर्णय की अपीलें सुनना ।

C. जिला दण्डाधिकारी के रूप में

1. जिले में शांति व्यवस्था और कानून व्यवस्था बनाए रखना ।
2. शान्ति भंग होने से उत्पन्न संकट में आदेश जारी करना ।
3. साम्प्रदायिक दंगो , आतंककारी गतिविधियों , जन आन्दोलनों , उग्र छात्र प्रदर्शनों , राजनीतिक आन्दोलनों तथा जातीय संघर्षों पर नियंत्रण करना।
4. फौजदारी घटनाओं के बारे में पुलिस से जानकारी प्राप्त करना ।
5. जिले की पुलिस के कार्यों का निरीक्षण करना और उसे तत्संबंधी आदेश एवं निर्देश जारी करना ।
6. अपराधियों और असामाजिक तत्त्वों को जिले से बाहर भेजना ।
7. जिला कारागारों एवं उनमें रहने वाले कैदियों का निरीक्षण करना ।
8. जिला पुलिस प्रशासन की वार्षिक रिपोर्ट प्राप्त करना और गृह विभाग को उस वार्षिक रिपोर्ट को भेजना ।

Q. जिला दण्डनायक के रूप में जिला कलेक्टर की शक्तियाँ हैं ।(RAS. Pre. 2016)
(A) कानून व व्यवस्था बनाए रखना ।
(B) पुलिस पर नियंत्रण रखना ।
(C) विदेशियों के पारपत्रों की जाँच करना ।
(D) भू - राजस्व एकत्र करना ।
कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(1) A, B, C
(2) A, C, D
(3) B, C, D
(4) A, B, D
उत्तर - 1

1. नींबू वर्गीय फल या साइट्रस उत्कृष्टता केंद्र, नांता, कोटा (Centre of Excellence for citrus (Mandarin), Kota) - 2013
2. अनार उत्कृष्टता केंद्र, बस्सी, जयपुर (Centre of Excellence for Pomegranate Bassi, Jaipur) - 2013
3. खजूर उत्कृष्टता केंद्र, सागरा-भोजका, जैसलमेर (Center of Excellence for Date Palm (HRD & PHM), Sagra-Bhojka, Jaisalmer) - 2013
4. अमरूद उत्कृष्टता केंद्र, देवड़ावास, टोंक (Centre of Excellence for Guava, Devdawas, Tonk) - 2014
5. संतरा (साइट्रस), मसालों और औषधीय पौधों के लिए उत्कृष्टता केंद्र, झालावाड़ (Centre of Excellence for Citrus, Spices & Medicinal plants, Jhalawar) 2014
6. आंवला, आम, बेर, जैतून, अमरूद के लिए उत्कृष्टता केंद्र, खेमरी, धौलपुर Centre of Excellence for Aonla, Mango, Ber, Olive, Guava Khemri, Dholpur 2014
7. सब्जी फसल उत्कृष्टता केन्द्र, बून्दी (Center for Excellence for Vegetable Crops, Bundi)
8. फूल उत्कृष्टता केन्द्र, सवाईमाधोपुर (Center of Excellence for Flowers, Sawai Madhopur)
9. सीताफल उत्कृष्टता केन्द्र, चित्तौड़गढ़ (Center of Excellence for Custard Apple, Chittorgarh)

अध्याय – 2

अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य

प्रचलित कीमतों पर **सकल राज्य घरेलू उत्पाद** (जीएसडीपी) **वर्ष 2021-22** के लिए **₹11.96 लाख करोड़** होने का अनुमान है, जबकि **वर्ष 2020-21** के दौरान यह **₹10.13 लाख करोड़** था, जो कि **पिछले वर्ष** की तुलना में **18.04 प्रतिशत** की वृद्धि दर्शाता है। वर्ष 2021-22 में स्थिर (2011-12) कीमतों पर **सकल राज्य घरेलू उत्पाद** अनुमान **₹7.33 लाख करोड़** अनुमानित किया गया है जो कि वर्ष **2020-21 के ₹6.60 लाख करोड़** से **11.04 प्रतिशत की वृद्धि** दर्शाता है।

प्रचलित कीमतों पर शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (एनएसडीपी) वर्ष **2021-22** के लिए **₹10.79 लाख करोड़** होने का अनुमान है, जबकि **वर्ष 2020-21** के दौरान यह **₹9.14 लाख करोड़** था, जो कि **पिछले वर्ष** की तुलना में **18.01 प्रतिशत** की वृद्धि दर्शाता है। वर्ष **2021-22** में स्थिर (2011-12) कीमतों पर **शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद** अनुमान **₹6.48 लाख करोड़** अनुमानित किया गया है, जो कि **वर्ष 2020-21 के ₹5.84 लाख करोड़ से 11.05 प्रतिशत की वृद्धि** दर्शाता है।

प्रचलित कीमतों पर **प्रति व्यक्ति आय** वर्ष **2021-22** में **₹1,35,218** अनुमानित की गई है, जो कि गत वर्ष **2020-21** की **₹1,15,933** से 16.63 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाती है। **स्थिर (2011-12) कीमतों** पर **प्रति व्यक्ति आय** वर्ष **2021-22** में **₹81,231** अनुमानित की गई है, जो कि गत वर्ष **2020-21** की **₹74,009 से 9.76** प्रतिशत की **वृद्धि को दर्शाती** है।

आर्थिक विकास के मुख्य सूचक

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	सकल राज्य घरेलू उत्पाद	रु. करोड़	628020	642929	679564	660118	733017

	(अ) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर		832529	911674	999050	1013323	1196137
	प्रचलित मूल्यों पर						
2.	सकल राज्य घरेलू उत्पाद वृद्धि दर	प्रतिशत					
	(अ) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर		5.24	2.37	5.70	-2.86	11.04
	(ब) प्रचलित मूल्यों पर		9.46	9.51	9.58	1.43	18.04
3.	सकल राज्य मूल्य वर्धन स्थिर (2011-12) बुनियादी मूल्यों का क्षेत्रवार योगदान	प्रतिशत					
	(अ) कृषि		25.20	26.14	28.05	30.45	28.85
	(ब) उद्योग		32.52	27.65	26.09	25.26	26.34
	(स) सेवाएँ		42.28	46.21	45.86	44.29	44.81
4.	सकल राज्य मूल्य वर्धन प्रचलित बुनियादी मूल्यों का क्षेत्रवार योगदान	प्रतिशत					
	(अ) कृषि		26.14	25.88	27.83	30.98	30.23
	(ब) उद्योग		29.23	26.26	24.54	23.42	24.67
	(स) सेवाएँ		44.63	47.86	47.63	45.60	45.10
5.	शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद						
	(अ) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर	रु.करोड़	557618	568102	598550	583645	648142
	(ब) प्रचलित मूल्यों पर		748490	819340	898081	914262	1078903
6.	प्रति व्यक्ति आय						
	(अ) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर	रु.	73529	73929	76882	74009	81231
	(ब) प्रचलित मूल्यों पर		98698	106624	115356	115933	135218
7.	सकल स्थाई पूंजी निर्माण प्रचलित मूल्यों पर	रु.करोड़	236069	265091	283423	276473	-

8.	कृषि उत्पादन सूचकांक * (आधार वर्ष 2005- 06 से 2007-08 =100)		170.17	183.07	202.56	204.97	
9.	कुल खाद्यान्न उत्पादन *	लाख मैं. टन	221.05	231.60	266.35	269.09+	225.20-
10.	औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आधार वर्ष 2011-12 = 100)		133.08	140.37	126.90	122.34@	131.33@@
11.	थोक मूल्य सूचकांक (आधार वर्ष 1999-2000 = 100) प्रतिशत परिवर्तन		292.34 1.78	301.74 3.22	316.00 4.73	337.70 6.87	369.01$ 9.27
12.	अधिष्ठापित क्षमता (ऊर्जा)	मेगावाट	19553	21078	21176	21979	23321$
13.	वाणिज्यिक बैंक साख (सितम्बर)	रु.करोड़	219643	267523	315149	343406	375030

कृषि वर्ष से सम्बन्धित है !

\+ अन्तिम

\- अग्रिम

प्रावधानिक

प्रावधानिक दिसम्बर, 2021 तक

दिसम्बर. 2021 तक

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भारतीय अर्थव्यवस्था में राजस्थान का योगदान (2021-22)	
अर्थव्यवस्था का आकार	
	प्रचलित मूल्यों पर अखिल भारत : रु.232.15 लाख करोड़ राजस्थान : रु.11.96 लाख करोड़
	भारत की जी.डी.पी.में राज्य का प्रतिशत योगदान प्रचलित मूल्यों पर राजस्थान : 5.15

	जीडीपी / जीएसडीपी विकास दर (%) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर भारत : 9.2 राजस्थान : 11.04
	प्रति व्यक्ति आय प्रचलित मूल्यों पर भारत : रु. 1,50,326 राजस्थान : रु.1,35,218
सामाजिक संकेतक	
	साक्षरता दर (%) (2011 की जनगणना के अनुसार) भारत : 73.0 राजस्थान : 66.1
	जन्म दर – 2019 (प्रति 1000 जनसंख्या पर) भारत : 19.7 / राजस्थान : 23.7
	कार्य भागीदारी दर (%) (2011 की जनगणना के अनुसार) भारत : 39.8 राजस्थान : 43.6
जनसांख्यिकीय प्रोफाइल	
	भौगोलिक क्षेत्र (लाख वर्ग कि.मी.) (2011 की जनगणना के अनुसार) भारत : 32.87 राजस्थान : 3.42

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	जनसंख्या *(2011 की जनगणना के अनुसार)* *भारत : 121.09 करोड़* *राजस्थान : 6.85 करोड़*
	लिंगानुपात *(जनगणना 2011)* *(महिलाएं प्रति 1000 पुरुष)* *भारत : 943 / राजस्थान : 928*
राजस्थान में भौतिक आधारभूत संरचना	
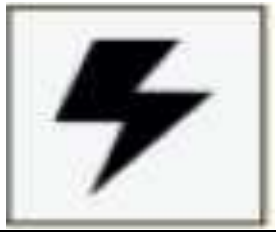	***स्थापित विद्युत क्षमता*** *(मेगावाट)* *भारत : 3,93,389* *राजस्थान : 23,321*
	सड़क घनत्व *(प्रति 100 वर्ग कि.मी.)* *भारत : 161.71 कि.मी.* *राजस्थान : 79.76 कि.मी.*
	डाक और दूरसंचार *(मार्च, 2021)* ***डाक घर –*** *भारत : 1,56,721* *राजस्थान : 10,287* ***दूरसंचार ग्राहक (करोड़)*** *भारत : 120.12* *राजस्थान : 6.68*

थोक एवं उपभोक्ता मूल्य सूचकांक

*राज्य का **सामान्य थोक मूल्य सूचकांक** (आधार वर्ष 1999-2000=100) वर्ष **2020** के **330.86** से **बढ़कर** वर्ष 2021 में **363.23** हो गया है, जो कि गत वर्ष से **9.78 प्रतिशत** की वृद्धि को दर्शाता है। गत वर्ष से प्राथमिक वस्तु ईंधन, शक्ति, प्रकाश एवं उपस्नेहक एवं विनिर्मित उत्पाद समूह के सूचकांक में क्रमशः **14.10, 11.91 तथा 4.91 प्रतिशत की वृद्धि** हुई है। जबकि अखिल भारतीय स्तर पर सामान्य थोक मूल्य सूचकांक (आधार वर्ष 2011-12-100) पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष **2021 में 10.67 प्रतिशत** की **वृद्धि** हुई है। वर्तमान में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक माह सितम्बर, 2020 से आधार वर्ष 2016=100 पर जारी किये जा रहे हैं, जिसमें राज्य में अजमेर केन्द्र के स्थान पर अलवर केन्द्र को शामिल किया गया है। औद्योगिक श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (आधार वर्ष 2016 -100) में दिसम्बर, 2021 में बढ़ती प्रवृत्ति देखी*

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान CET (Graduation level)" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी /

संपर्क करें – 8504091672, 8233195718,9694804063, 7014366728

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-cet-notes-graduation
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/kmk3lu

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO